2005

August

11 thu

Subject - C-6 Gender School & Society 2005

Topic - Functions of School

विद्यालय का कार्य

विद्यालय वह स्थान होता है, जहाँ शिक्षा दी जाती है, यह एक प्रकार की ऐसी संस्था होती है, जहाँ शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और मानसिक गुणों का विकास किया जाता है। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिये उन्हे उनके भविष्य के लिये तैयार करना विद्यालय का मुख्य कार्य होता है।

12 fri

ब्रुबेकर के अनुसार विद्यालय के कार्य :-

(i) संरक्षण कार्य
(ii) प्रगतिशील कार्य
(iii) निष्पक्ष कार्य अथवा अभेदात्मक व्यवहार की शिक्षा का कार्य

टॉमसन के अनुसार विद्यालय के कार्य :-

(i) मानसिक प्रशिक्षण का कार्य
(ii) चारित्रिक प्रशिक्षण का कार्य

14 sun

13 sat

(iii) सामुदायिक जीवन का प्रशिक्षण का कार्य
(iv) राष्ट्रीय गौरव तथा देश-प्रेम का प्रशिक्षण
(v) स्वास्थ्य तथा स्वच्छता का प्रशिक्षण।

सरलता के लिये हम विद्यालय के कार्यों को दो ~~[illegible]~~ भागों में विभाजित करते है :-

(A) विद्यालय के औपचारिक कार्य
(B) विद्यालय के अनौपचारिक कार्य

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

Notes

औपचारिक कार्य :- विद्यालय के औपचारिक कार्यों का सम्बन्ध बालक के मानसिक विकास से है। इस संबंध

P.T.O

Scanned with CamScanner

में विद्यालय के निम्नलिखित कार्य है :–

15 mon

(i) मानसिक शक्तियों का विकास
(ii) गतिशील तथा सन्तुलित मस्तिष्क का निर्माण
(iii) व्यावसायिक तथा औद्योगिक शिक्षा
(iv) नागरिकता का विकास
(v) चरित्र का विकास
(vi) नेतृत्व क्षमता का विकास
(vii) मानवीय अनुभवों का पुनर्गठन तथा पुनर्रचना
(viii) संस्कृति की सुरक्षा, सुधार तथा हस्तान्तरण

16 tue

विद्यालय के अनौपचारिक कार्य :– विद्यालय के अनौपचारिक कार्यों का संबंध बालक के शारीरिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास से है। इस सम्बन्ध में विद्यालय के निम्नलिखित कार्य है :–

(i) शारीरिक विकास
(ii) सामाजिक भावना का विकास
(iii) संवेगात्मक विकास

17 wed

(iv) रचनात्मक विकास

कुल मिलाकर, विद्यालय एक बच्चे के पूरे दौर के विकास के लिये जिम्मेदार है। जब बच्चे विद्यालय में प्रवेश लेते हैं, तो उनके प्रवेश के समय माता-पिता के अनगिनत सपने जुड़े होते हैं। विद्यालय में शिक्षकों से बच्चों को सभी विषयों का बेहतर ज्ञान मिलता है उच्च शिक्षा तथा रोजगार विकल्पों के बारे में अवगत कराना विद्यालय का मुख्य कार्य है।

—x—

July 2005	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	31					1	2
	3	4	5	6	7	8	9
	10	11	12	13	14	15	16
	17	18	19	20	21	22	23
	24	25	26	27	28	29	30

Notes

Scanned with CamScanner

August 18 thu

Subject - C-6. Gender School & Society

2005

Topic :- Issues of Masculinity and Feminity

पुरुषत्व तथा स्त्रीत्व के मुद्दे

बालक तथा बालिकायें ही भविष्य में जाकर पुरुष तथा स्त्रियाँ बनते हैं। पुरुष तथा स्त्री दोनों जेण्डर मिलकर ही किसी समाज का निर्माण करते हैं। यह दोनों ही एक गाड़ी के दो पहिये माने जाते हैं। जीवन रूपी गाड़ी चलाने के लिए इन दोनों ही जेण्डर के व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। जीवन की सकारात्मक उन्नति तथा समृद्धि के लिए इन दोनों ही जेण्डरों का न केवल शिक्षित होना ही आवश्यक है बल्कि जीवन की अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सामंजस्य स्थापित करना भी आवश्यक है।

पुरुषत्व तथा स्त्रीत्व का उनके कार्यों के अनुसार विशिष्टीकरण कर दिया गया है। समाज में दोनों की भूमिका का विभाजन हो गया है। दोनों की भूमिका में भिन्नता देखी जाती है। समाज में लिंग विशिष्टीकरण के अनुसार पुरुषों को आर्थिक शक्ति के रूप में स्थापित किया गया है। उन्हें परिवार की सर्वेसर्वा की स्थिति प्रदान की जाती है। धन, सम्पत्ति तथा सत्ता पुरुषों के हाथों में निहित होती है। महिला को तो सदैव पराये घर का माना जाता है। यह भाव बचपन से ही उसके मन में डाले जाते हैं।

घर तथा समाज में पुरुष लिंग की भूमिका :-

घर तथा समाज में पुरुष को घर का मुखिया माना जाता है। परिवार को उसी के नाम से पहचान होती है। मुखिया के निर्देशों तथा आदेशों का पालन करना परिवार के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य माना जाता है।

Notes

पुरुष घर में निम्न प्रकार की भूमिकाओं का वहन करता है :-

(i) पुरुष पिता के रूप में :- परिवार

September 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

P.T.O

Scanned with CamScanner

22 mon

में पुरुष का पिता के रूप में सबसे अधिक महत्व माना जाता है। वह परिवार की एकता को बनाये रखता है। वह परिवार के सभी सदस्यों पर नियंत्रण रखने का प्रयास करता है। पिता परिवार में पुत्रों को अधिक प्राथमिकता देता है, क्योंकि उसे ऐसा प्रतीत होता है कि वे घरेलू दायित्वों को निभाने में उसका सहयोग करेंगे। परिवार में सभी महत्वपूर्ण कार्य पिता के अनुमति से होते हैं। परिवार में सभी बच्चों को एक दृष्टि से देखना, लिंगभेद न करना, सभी को एक समान शिक्षा की अवसर प्रदान करना तथा परिवार की अधिकतम

23 tue

आवश्यकताओं की पूर्ति करना ही पिता को परिवार में सम्मान का पात्र बनाता है।

(ii) पुरुष पति के रूप में: भारतीय समाज में पति एक शासक के रूप में पत्नी के साथ व्यवहार करता है। महिलाओं ने भी अपने पतियों को ईश्वर तुल्य स्थान दिया है। पति का दायित्व बनता है कि वह पत्नी को अर्द्धांगिनी समझे। उसके साथ हिंसक व्यवहार न करे।

(iii) पुरुष पुत्र के रूप में: पुरुष प्रधान समाज में सम्पति पिता से पुत्र को हस्तान्तरित होती है। पुत्र के रूप में

24 wed

पुरुष घर की सम्पति पर अपना एकाधिकार समझता है। वह अपने पिता की भाँति ही बहनों को वैवाहिक बन्धन में बाँध देना ही अपना दायित्व समझता है। पुत्र का यह भी दायित्व माना जाता है कि वह अपने माता-पिता का आदर करे, वृद्धावस्था में देखभाल करे तथा समय पड़ने पर अपने परिवार की आर्थिक सहायता भी करे।

(iv) पुरुष भाई के रूप में:- घर में पुरुष की भूमिका एक भाई के रूप में भी महत्वपूर्ण मानी जाती है। उसका अपने भाइयों तथा बहनों के प्रति विशेष कर्तव्य माना जाता है। पिता की अनुपस्थिति में उसकी जिम्मेवारी और बढ़ जाती है।

—X—

July 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

Notes

Scanned with CamScanner

August 25 thu 2005

Subject - C-6, Gender School & Society

Topic : Role of Masculine & Feminine Gender
(पुरुष तथा महिला लिंग की भूमिका)

समाज में पुरुष की भूमिका :- भारतीय समाज में पुरुषों की अहम भूमिका रही है। विकसित तथा अविकसित देशों में पुरुष अपने विशिष्ट कार्यों के द्वारा अग्रणी है। पुरुष समाज में निम्न भूमिका का वहन करता है :-

(i) परिवार के मुखिया के रूप में :-

26 fri

समाज में अर्थात भारत के बाहर पुरुष की भूमिका परिवारों के मुखिया के रूप में होती है। परिवारों से ही समाज की स्थापना होती है। अतः समाज की एक इकाई के रूप में प्रत्येक परिवार को समाज में महत्व दिया जाता है और पुरुष को पितृसत्ता के कारण परिवार का मुखिया माना जाता तथा समाज में उसके नाम से ही परिवार को जाना तथा समझा जाता है इसलिए सामाजिक इकाई में पुरुषों को परिवार के मुखिया के रूप में महत्व दिया जाता है। धार्मिक कार्यों तथा सामाजिक

27 sat

कार्यों में भी उसे समाज के कार्यों में चन्दा, आदि देने के लिए भी

28 sun

विशेष महत्व दिया जाता है।

(ii) सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में :-

पुरुष की समाज में पहचान केवल किसी परिवार के मुखिया के रूप में ही नहीं होती बल्कि समाज के सभी प्रकार के कार्यों में उसकी भागीदारी आवश्यक मानी जाती है। सामाजिक उत्सवों तथा धार्मिक उत्सवों में उसकी उपस्थिति महत्वपूर्ण मानी जाती है। समाज चूंकि व्यक्तियों से ही मिलकर बनता है, अतः समाज के क्रियाकलापों में पुरुष की सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भूमिका होती है।

September 2005	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2	3
	4	5	6	7	8	9	10
	11	12	13	14	15	16	17
	18	19	20	21	22	23	24
	25	26	27	28	29	30	

(iii) राजनीतिक व्यक्तित्व के रूप में :-

अपनी इच्छा तथा

P.T.O

Scanned with CamScanner

29 mon विचारधारा के कारण सभी पुरुष किसी-न-किसी राजनैतिक पार्टी से सम्बद्ध हो जाते हैं। इस प्रकार सभी पुरुषों के परिवार के मुखिया के रूप में तथा सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में और राजनैतिक व्यक्तित्व के रूप में महत्व दिया जाता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण परिवारों में राजनैतिक महत्व पुरुषों को ही प्राप्त होता है क्योंकि पुरुषों की घर के बाहर समाज की क्रियाकलापों में भी भागीदारी होती है तथा परिवार उनके आदेश पर ही वोट देगा। ऐसा समझा जाता है। अतः पुरुष की समाज में पहचान राजनैतिक व्यक्तित्व के रूप में भी की जाती है।

30 tue

(iv) आर्थिक व्यक्तित्व के रूप में तथा संसाधनों के नियन्त्रणकर्त्ता के रूप में :- समाज में पुरुषों की पहचान एक आर्थिक व्यक्तित्व के रूप में भी होती है। पुरुषों का आर्थिक संसाधनों पर पूर्ण नियन्त्रण होता है। धन सम्बन्धी निर्णय अधिकतर परिवार में पुरुषों के द्वारा ही लिये जाते हैं। समाज में किसी प्रकार के दान, चन्दा आदि प्राप्त करने के लिये पुरुषों को ही अपनी भूमिका निभानी पड़ती है।

31 wed

(v) विशेष स्वतन्त्रता प्राप्तकर्त्ता के रूप में :- समाज में पुरुषों को विशेष स्वतंत्रता प्राप्त होती है। इन्हे किसी से भी संबंध स्थापित करने की स्वतन्त्रता होती है। इनमें किसी भी प्रकार की नैतिकता नहीं जुड़ी होती है। उनके ऊपर कोई बन्धन समाज नहीं लगाता है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भारतीय समाज ने नेतृत्व क्षमता को प्रदर्शित करने में पुरुषों का विशेष योगदान रहा है। जैसे - महात्मा गांधी, गोपाल कृष्ण गोखले, सरदार वल्लभ भाई पटेल, आदि ने बड़ी भूमिकाएँ निभायी। धार्मिक क्षेत्रों में भी पुरुषों का विशेष महत्व है जैसे- राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, मोहम्मद साहब, ईशा मसीह आदि।

— x —

Notes

July 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2
31					8	9
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

Scanned with CamScanner

September 2005

1 thu

Subject - C-6 Gender, School & Society

Topic - Role of Feminine Gender in Family & Society

(घर तथा समाज में महिला लिंग की भूमिका)

घर तथा समाज में परम्परागत रूप से महिलाओं को कमजोर जाति-वर्ग के रूप में माना जाता है। भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका घरेलू दायित्वों, बच्चों को जन्म देना, पालन-पोषण करना, भोजन पकाना, घर को सुव्यवस्थित रखना तथा पुरुषों के निर्णय को क्रियान्वित करने में उन्हें सहयोग प्रदान करने के रूप में होती है। महिलायें चाहे अपनी कमाई का पूरा

2 fri

पैसा परिवार की आवश्यकताओं में लगा दें परन्तु उनका पहला कार्य घरेलू जिम्मेवारियों को स्वयं पूरा करना ही माना जाता है। उनकी पहचान आर्थिक आत्मनिर्भर शक्ति के रूप में नहीं होती है।

महिलायें घर में निम्न भूमिकाओं का वहन करती हैं:—

(i) नारी माता के रूप में :- माता की रूप में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती

3 sat

है। माता के रूप में नारी परिवार में अपना सम्पूर्ण ध्यान बच्चे के 4 sun विकास पर केन्द्रित कर देती है। माता के रूप में नारी अपनी संतान में विभिन्न सामाजिक गुण जैसे- ईमानदारी, आत्मविश्वास, अनुशासन, सद्व्यवहार आदि आदतों को विकसित करती है। माता ही बच्चे के अन्दर नैतिक तथा चारित्रिक गुणों का विकास करती है। वह अपने पति की सहायता से बच्चों का लालन-पोषण करती है। माता से कुछ अन्य भूमिकाओं को भी परिवार अपेक्षा रखता है- सास-ससुर की सेवा करना, परिवार के प्रत्येक सदस्य का ध्यान रखना, ममतामयी माँ बनकर रहना आदि।

October 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

Notes

(ii) नारी पत्नी के रूप में :-

पत्नी के रूप में नारी का कर्तव्य होता है कि वह अपने पति की

P.T.O

Scanned with CamScanner

5 mon देखभाल करें। उसकी सभी आवश्यकताओं को ध्यान रखें तथा उनके व्यवसाय में रुचि ले तथा उसे उच्च से उच्चतर बनाने में पति को प्रेरणा दे। पत्नी के रूप में उससे यह भी आशा रखी जाती है कि वह पति के परिवार के सभी सदस्यों का ध्यान रखेगी। उसके माता-पिता को अपना माता-पिता समझेगी, चाहे वे उसके साथ कैसा भी व्यवहार करें। पत्नी के मुख्य कार्य घर में भोजन बनाना, बच्चे का देखभाल करना, घर को सुव्यवस्थित रखना, बच्चे को जन्म देना आदि है।

6 tue (iii) नारी पुत्री के रूप में :-

पुत्री के रूप में महिला से सदैव यह आशा की जाती है कि वह अपने पिता की इच्छाओं का उल्लंघन न करें। पिता यदि अनुमति प्रदान करें तो वह शिक्षा ग्रहण करें अन्यथा नहीं। पिता की इच्छा से ही तथा पसन्द से ही जीवन साथी का चयन करें। समाज में अच्छी पुत्री से किसी प्रकार की विरोध की आशा नहीं की जाती है। पुत्री के रूप में स्त्री का यह दायित्व है कि वह अपने परिवार की मर्यादाओं की रक्षा करें।

7 wed (iv) नारी पुत्रवधु के रूप में :-

पुत्रवधु के रूप में नारी से एक आदर्श तथा परिपक्व गृहिणी की आशा की जाती है जो सभी घरेलू कार्यों में दक्ष हो और इतनी आज्ञाकारी हो कि बिना उनकी अनुमति के कोई कार्य न करें। परिवार के सभी सदस्यों का ध्यान रखें तथा उनकी सेवा-सुश्रुषा करें तथा किसी भी प्रकार का तर्क न करें। पुत्रवधु के रूप में नारी को सदैव सामंजस्य करना पड़ता है।

Scanned with CamScanner

September 2005

8 thu

Subject - C-6 Gender School & Society

Topic - Role of Feminine Gender in Society
(समाज में महिला लिंग की भूमिका)

महिलाएँ समाज के विकास में एक महान भूमिका निभाती हैं और इसे एक उन्नत और आधुनिक समाज बनाती हैं। महिलाओं को शिक्षित करना और उन्हें शक्ति देना बहुत महत्वपूर्ण है जिसका समाज में महिला सशक्तिकरण और समाज के विकास के लिए अनुसरण करने की आवश्यकता है। महिलायें समाज में निम्न भूमिका का वहन करती हैं :-

9 fri

(i) गृहिणी के रूप में :-

भारतीय समाज में महिलायें परिवार की मुख्य 'धुरी' होती है, जो कि एक गृहिणी के रूप में राष्ट्र-निर्माण तथा विकास में अपनी उत्कृष्ट भूमिका निभाती है। गृहिणी के रूप में महिला की पहचान परिवार में भोजन बनाना, घर की साफ सफाई तथा व्यवस्था बनाये रखना, बच्चे की परवरिश करना, आदि। यदि महिलायें शिक्षित है तो यह भी उससे अपेक्षा रखी जाती है कि वह अपने बच्चों को शिक्षित करेगी।

10 sat

11 sun

(ii) पुरुष की पत्नी के रूप में :-

सदियों से देखने में आया है कि जब भी देश पर संकट आया है तो पत्नियों ने ही अपने शौहर के माथे पर तिलक लगाकर जोश, जूनून और विश्वास के साथ रणभूमि में भेजा है। पत्नी के रूप में परिवार की भाँति ही समाज में उनसे एक अच्छी, पतिव्रता, आज्ञाकारी, सेवाभावी पत्नी की अपेक्षा करता है जो अपने पति के अधीन रहकर अपने ऊपर दी गयी सभी जिम्मेदारियों को पूरा करे। समाज में उसका अस्तित्व केवल पत्नी के रूप में होता है।

October 2005

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

Notes

(iii) माता के रूप में :-

घर के बाहर समाज में उसकी भूमिका एक माता के रूप में ही मानी

P.T.O

September 2005

12 mon

जाती है। नेपोलियन बोनापार्ट ने "माँ" की गरिमा को समझाते हुये कहा था कि - "मुझे एक योग्य माता दो, मैं तुम्हें एक योग्य राष्ट्र दूँगा।" इस कथन से माँ के स्वरूप का राष्ट्र-निर्माण और विकास में अतुलनीय योगदान दिखा है। मानव-कल्याण की भावना, कर्तव्य, सृजनशीलता एवं ममता को सर्वोपरि मानते हुये महिलाओं ने इस संसार में माँ के रूप में अपना सर्वोपरि भूमिका को निर्वहन किया है।

(iv) संस्कृति, संस्कार और परम्पराओं की संरक्षिका के रूप में:-

महिलायें ही संस्कृति, संस्कार और परम्पराओं की

13 tue

वास्तविक संरक्षिका होती हैं। सम्पूर्ण विश्व में भारत को विश्वगुरु का दर्जा दिलाने में महिलाओं की भूमिका रही है। यही कारण है कि भारत को संस्कृति और परम्पराओं का देश कहा जाता है। वे पीढ़ी दर पीढ़ी इनका संवारण और संरक्षण करती रहती हैं।

(v) सामाजिक-शैक्षिक-धार्मिक योगदान:-

कहा भी गया है कि सशक्त महिला, सशक्त समाज की आधारशिला है। माता बच्चे की प्रथम शिक्षक है, जो बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिये

14 wed

उत्तरदायी है। जब यह शिक्षिका परिवार से निकलकर समाज में शिक्षा का दान करती है तो यह एक सर्वोत्तम तथा पावन कार्य हो जाता है। देश की प्रथम शिक्षिका 'सावित्री बाई फुले' एक अनुकरणीय उदाहरण है।

सदियों से ही भारतीय समाज में नारी की अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। चाहे वह सीता हो, झांसी की रानी, इन्दिरा गाँधी हो, सरोजनी नायडू हो, सभी ने भिन्न-भिन्न रूपों में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

August 2005

Notes

Scanned with CamScanner

September 15 thu

Subject - PSS-10 Pedagogy of Science (Biological Science) 2005

Topic - Nature of Science (ii)

(iii) जीव विज्ञान ज्ञानेन्द्रियों का विज्ञान है:- (Biology is an Empirical Science)

जीव विज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जिसके द्वारा किसी भी घटना को निरीक्षण तथा प्रयोग के आधार पर समझा जा सकता है तथा व्याख्या की जा सकती है। बचपन से बड़े होने तक वैज्ञानिक दृष्टिकोण चेतना प्रदान करता रहता है और हम अपनी सामान्य बुद्धि का विवेकसंगत उपयोग करते हैं।

16 fri

(iv) जीव-विज्ञान की विधि :-

जीव-विज्ञान के अध्ययन में बहुत-सारी विधियों का प्रयोग किया जाता है जिसमें आगमन तथा निगमन विधि, विश्लेषण-संश्लेषण विधि, पर्यटन-विधि, प्रयोग-प्रदर्शन विधि आदि प्रमुख है। इन विधियों में भिन्न-भिन्न उदाहरणों के आधार पर किसी परिणाम या निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है।

17 sat 18 sun

(v) कारण-प्रभाव सम्बन्ध (Cause & Effect Relationship) :-

जीव-विज्ञान के क्षेत्र में प्रत्येक घटना तथा प्रभाव का कोई-न-कोई कारण होता है जैसे- पौधे की पत्तियों का पीला पड़ना, कीटाणुओं का पैदा होना, शरीर में कमजोरी का होना आदि। किसी भी घटना का कारण अवश्य होता है।

(vi) गतियुक्तता (Dynamism) :-

जीव-विज्ञान के अन्तर्गत अध्ययन की जानेवाले वस्तुओं में जीवन होता है जिसकारण उसमें सदा परिवर्तन होता रहता है। अतः इस

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

October 2005

Notes

P.T.O

Scanned with CamScanner

19 mon परिवर्तन के कारण उनमें हमेशा रुचि बनी रहती है।

(vii) सौन्दर्य अनुभूति (Aesthetic Sensitivity) :- वैज्ञानिक अपने प्रयोगों में ही सौन्दर्य के दर्शन करता है। उनके आविष्कारों द्वारा मानवता को जो कल्याण होता है वही वैज्ञानिक-सौन्दर्य का प्रतीक है। जीव विज्ञान विषय के अन्तर्गत व्यक्ति को प्रकृति के सौन्दर्य की अनुभूति होती है। इसमें आकार,
20 tue बनावट, रंग, रूप आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है।

(viii) संगठन (Organization) :- जीव-विज्ञान के क्षेत्र में प्रत्येक कार्य एक संगठित रूप में होता है। एक अंग या भाग कैसे दूसरे पर प्रभाव डालता है तथा मिल-जुलकर एक संगठित कार्य करता है।

जैविक विज्ञान मात्र ज्ञान नहीं
21 wed है, यह चिन्तन की एक विधि है, जिससे यह ज्ञान विकसित हुआ और वह ज्ञान अन्य नवीन ज्ञान प्राप्त करने में सहायक है। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक तटस्थ भाव से सत्य का समर्थक होता है। निष्ठापूर्वक अपने प्रयोगों को करने, निरीक्षण में सावधानी बरतने, परिणाम की सत्यता का निश्चय करने में ही वैज्ञानिक अपने कर्तव्य की सफलता समझता है।

—x—

	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
August 2005		1	2	3	4	5	6
	7	8	9	10	11	12	13
	14	15	16	17	18	19	20
	21	22	23	24	25	26	27
	28	29	30	31			

Notes

Scanned with CamScanner